समय से पहले

श्री हर्ष

"मंजु" और "रचना" के लिए

मूल्य : आठ रुपया

प्रथम संस्करण : १९७६

प्रकाशक :
सामयिक प्रकाशन
क्यु १०, ४०/१, टेंगरा रोड, कलकत्ता-१५

मुद्रक :
अरुण प्रिंटिंग प्रेस
६ बी, सिकदर पाड़ा स्ट्रीट, कलकत्ता-७०

चित्रकार : दत्तो-बाबू

आभार : श्री अवध नारायण सिंह, श्री भूपराज जैन

विषय-सूची



कितनी ही नौकायें, घाट के खूँटे से
बंधी की बंधी रह गई
मन मारे।
कई बार लहरों ने गुदगुदी की
हवा से साठ-गांठ कर उकसाया
धीरे से फुसफुसाया—
कशमशाकर तोड़ दो बंधन
उखाड़ ले चलो खूंटा
तेज धार में बहेंगे
नीले आकाश तले
पानी के फूलों पर रहेंगे।
हर कदम तूफानों से खेलेंगे
झंझा को झेलेंगे
लेकिन जियेंगे तो खुलकर
यूं बंध कर जीना
घुट-घुट कर सांस लेना
मन मारे रहना
जिन्दगी नहीं है।

फ्यूज्ड बल्बों से ही रोशनी मिलने वाले
विश्वास ने—इतने गहरे से तोड़ा है
कि अब गाढ़े अंधेरे से सिर टकराकर
रोशनी पैदा करना ही अच्छा लगता है।
कुंडियाँ खटखटाने से दरवाजे
कोई नहीं खोलता
काटनी पड़ती हैं अर्गलाएँ अपने ही हाथों।
अपनी तमाम यात्राओं के लेखे-जोखे से
मुझे लगा कि मेरे पास
एक इञ्च स्ववायर जमीन का टुकड़ा भी अपना नहीं है
जिसे घर की संज्ञा दे सकूँ
बच्चे की तरह अपने को बहलाने के लिए
मैंने कोई भी वर्ष ऐसा नहीं छोड़ा।
जिसमें आकाश-धरती को खिलौनों की तरह
जेबों में न ठूंसा हो
और जब भी हवा तेज चली
खिलौने उछाल दिये और हंसता रहा।
हर सुबह
एक पोलिया ग्रस्त आदमी
मेरे पास बीमारी फेंक भाग जाता है
सारी हलचल
एक दबाव की तरह झुककर ढांपती है
मैं हवा की तरह निकल कर बेतहाशा दौड़ता हूँ
और मैंने पोलिया ग्रस्त आदमी को पकड़कर
रक्त की नदी में फेंक दिया है

सच ! अब उस आदमी ने बीमारी फेंकनी
बन्द कर दी है ।

मुझे इतिहास चूसे गन्ने की तरह लगा ।
अपनी यात्राओं के दौरान
मुझे वस्तु बनकर बिकना अच्छा लगा
इतिहास बनने की जगह—
एक व्यापारी ने मुझे बारूद की शक्ल दी
और उछाल दिया सभी दिशाओं में
मैंने ध्वंस और निर्माण दोनों ही किये
नयी जिन्दगी की शुरूआत
पिघलते इस्पात की भट्ठियों के सामने खड़ी
एक लड़की के साथ हुई
इस्पात को नये सांचों में ढालते वक्त
वह जिन्दगी का गीत गुनगुनाती है
और मैं ठंडे अन्धेरे पर आंच के टुकड़े फेंकता हूं ।

घड़ियाँ—कैद-शहर

मेरे शहर में
सूरज उगते ही
दीवारों पर टँगी घड़ियों में
हर आदमी कैद हो जाता है।
पल-पल का हिसाब माँगती है सुई
उत्तर के डर से—
खाता बही-फाइलों में पसर जाता है।
पारदर्शी-शीशों से
बॉस की आँखें चमकती हैं
स्टेनो हँसती है, क्लर्क की देह काँपती है।
'क्वालिटी' से एक आने की मुड़ी तक लंच चलता है
पार्कों में ड्राईवर ताश खेलते हैं,
तगादगीर कथा सुनते हैं
और फुरसती बीबियाँ मारकेटिंग
बार-कॅफे-रेस्ट्राँ-भोगती हैं
चावलों के कंकर चुनती हैं
बच्चों के कपड़े सिलती हैं।

एक चुम्बक लगे चक्कर से चिपककर
सारा शहर घूमता है।
सड़कों पर ट्राम, बस, टैक्सी
मकड़ी का जाल बना लेती हैं।
ऊब-झुंझलाहट-खीझ टेलीफोन के रांग-नम्बर
विवशता से तनी नसें
हड़ताल के नारे—
डिचार्ज लेटर देखकर

बूढ़ा सूरज
खाँसते-खाँसते हारकर
पश्चिम की चटाई पर लुढ़क जाता है।
भट्टियों में जले कोयलों की राख-जैसे
हर आदमी सड़क पर उछाल दिया जाता है।
और फिर—पोस्टरों की तरह चिपककर
बोरों की तरह लदकर
सैंडविच का टमाटर बन घर लौटता है।

गिरजे की घड़ियाँ टंकोरे बजाती हैं
शाम और रात साथ ही उतर आती हैं,
रोटी से सेक्स तक के प्रश्न—
फिर लम्बे होकर खड़े हो जाते हैं।
और मैं उन घड़ियों पर जोर-जोर से
पत्थर मारता हूँ ।।

टॉवर पर टंगा शहर

कुहासे ने बाँधकर
शहर सारा गठुर में
टाँग दिया टावर पर।
कुनमुनाती है लैम्पपोस्टों की रोशनी
बार-बार चोंच मारता कबूतर
फैलाकर पङ्ख ढ़ाप लेती कबूतरी।
रात पाली पटकलों के मजदूर
नारे लगा आकाश तोड़ देते हैं
कैद हुवा मुक्त-तीर सी भागती,
गठुर खुल जाता है
शहर जाग जाता है।

एक मनःस्थिति : कॉटन मिल्स

केमिकल्स की एक मिली-जुली गन्ध
सारे वातावरण में इस तरह घुल गई है
कि अब आदमी में
और कपड़े में कोई फर्क ही नहीं लगता।
सारा बोध थान पर लगे मार्कों की तरह हो गया है,
रात दिन कानों के पास
एक ही गूँज घूमती है—बायलर की!
जब भी गाँव से पत्र आता है—
माँ की बीमारी—बच्चों के गर्म कपड़े
आने की सूचना लौटती डाक से—
और मैं खीझकर
उस पत्र के आगे लिख देता हूँ
कपड़ा-कपड़ा और कपड़ा !!!
कितना अच्छा होता
कि सारा गाँव यह गन्ध पी लेता
और पत्र में लिखता :
कास्टिक सोडा, लंच का सायरन
बास की डंट प्रोडक्शन रिपोर्ट
लौटती डाक से भेजें !!

रीढ़ की हड्डी

सुबह की धूप तीखे नेजों की तरह चुभती है सारे शरीर में
ताप के दबाव से चिटके शीशे की तरह
अपने भीतर चिटकना महसूस करता हूँ
और बायें हाथ से रीढ़ की हड्डी टटोलता हूँ
मुझे लगता है वह टेढ़ी हो गयी है !
सूरज जब भी तेज तपता है
कमरों की घुटन सड़क पर पसरे कोलतार की तरह
पिघल कर बहने लगती है ।
बीमार लोग अस्पतालों के बिस्तर गन्दे करते हैं
मेरे दाहिने हाथ के पास एक जवान नङ्गी लड़की
अपने थके शरीर को धूप से धोकर बिस्कुट खाती है !!
और मुझे लगता है मेरी रीढ़ की हड्डी टेढ़ी हो गयी है !!!

लोगों ने (सुविधा के लिये) शब्दों का समाजीकरण इस तरह कर लिया है
कि अब सभ्य और असभ्य शब्दों के अलग-अलग शब्दकोश बन गये हैं ।
मैं अब भी असभ्य शब्द बोलता हूँ
मुझे बर्फ की शिलाओं के बीच दबा दिया जाता है ।
मेरी साँस इतनी तेज चलने लगती है
कि नसों को ठण्डापन महसूस ही नहीं होता !!!
और मैं ताप की तलाश में बेतहाशा दौड़ता हूँ—
हवा ने फासफोरस के टुकड़े बाँस-वनों में उछाल दिये हैं
और अब तमाम जङ्गलों में आग सीटियाँ बजाती घूमती हैं
आकाश धुएँ की परतों से ढक गया है ।
सूरज किसी रङ्गीन गुब्बारे की तरह
शून्य में हिलता नजर आता है !!
मैं आग के घेरों में रीढ़ की हड्डी को और ताप देता हूँ !!!

यात्रा उपलब्धियाँ

मेटरनिटी हॉस्पिटल से
नीमतल्ले तक की यात्रा उपलब्धियों में—
एक औरत स्वेटर बुनती—
एक बच्चा स्कूल जाता
एक किरानी ब्रेड खरीदता
एक अफसर चार्ज-शीट साइन कर
स्टेनो को फोन करता × × × — — —
एक सेठ सेक्सी किताब पढ़ता × × × × — — —
एक लेखक सिगरेट के टुकड़ों का पुल बनाता
एक चित्रकार दीवारों पर नंगे चित्र आंकता
और इन सबको जोड़ती-एक मशीन
जिसके कनवेयर पर लिखा—जिन्दगी।

अकेलापन : एक अनुभूति

हिलते हैं खिड़कियों के परदे
रङ्गीन रोशनदानों में
हंसती हैं परछाइयां।
और मेरा एक पड़ोसी
आधी रात गये— बजाता है गिटार
दुखते मन से।

सुनकर जिसे ठहर जाती है रात
छज्जे से झूलते अंधेरे से
करती है बात चुप चाप।

फिर मेरे कमरे के केलेण्डर में
अलसकर जागती है याद
सच ! महसूस करता हूँ
एकदम अकेलापन
ऐसे में घाव ज्यों दुखता है
मेरा मन
लेकिन फिर सुनता हूँ
दस्तक दरवाजे पर।

रेल के डिब्बे की भोर—एक लैंड स्केप

डिब्बे की बन्द खिड़कियाँ
खुलवाती हैं
पारदर्शी शीशों से मुस्कराती भोर।
पहाड़ियों पर चिड़ियों की तरह
फुदकती किरणें
खुले खेतों में—धीरे धीरे
पसरती धूप
निर्बाध हरी घास चरते ढोर
बस्ता लटकाये—स्कूल जाते
बच्चों का शोर।

पनघट पर मटकियों की भीड़
पगडंडियों पर खेते जाते
हलवाहों के झुण्ड
फूस के झोपड़ों से उठता
उपलों का धुआं
प्याज-लहसुन की छौंक
पीपल तले राम कथा
राम बचाये भूख-रोग।

सरपट भागती धरती
रह-रह चक्कर काटते पेड़
तबले से ताल मिलाती
पटरियों पर चटकती ट्रेन
झरबेरियां चबाती बकरियां
ताल तीरे मिमियाती भेड़
पारदर्शी शीशों से मुस्कराती
रेल के डिब्बे की भोर।

आँख-झील में मुस्कराते
यादों के नील कमल
स्याह हो गये हैं
अब अकेलेपन से लड़ने का आधार
यादें नहीं
अनगिन भुला दी गयी गलत पुस्तकों की तरह
यादों को भूलना
और उलझनों के घेरे तोड़
नये शब्दों के अर्थ विस्तार में
जीवन ढूँढ़ना है।

★ ★

उपमाओं से लदे
प्रेम-पत्र पढ़ते वक्त
ऐसा लगता है
कि मैं किसी खण्डहर के बीच से
गुजर रहा हूँ
जो किसी भी क्षण हवा के छूने से
गिर सकता है
मुझे कलेंडर में खड़ी लड़की को
पढ़ना अच्छा लगता है
जो स्वेटर में धूप के रंगीन टुकड़े
बुनती है
डूबते सूरज पर हँसती है।

युनिवर्सिटी की क्लासें
बेंचों पर चुपचाप बैठ
सुनते हैं लेक्चर !
संकेतों में गुफ्तगू
ब्लैक-बोर्ड पर टंगी आखें।
नये लड़के को बुद्धू बनाने की योजना
रीता 'अनिता' सीरिअसली सोचना
वर्तमान धुंधला है
अतीत सब स्वर्णिम है
नये सन्दर्भों में पढ़े
"भक्तिधारा आजकी सबसे श्रेष्ठ धारा है" ।
और पीछे की खिड़की से
बारबार उछलकर आता है कोलाहल
जिसमें—ट्राम, बस, टेक्सी, लॉरी के हार्न हैं
बाँसुरी बेचनेवाले का गीत है
मेडिकल कालेज के मरीजों की चीख है
और मैं सोचता
दो प्रश्न चिन्हों के बीच।

ऑफ पीरियड और क्लास

उतरते सूरज की गुलाबी धूप
क्लास की बेंचों पर टुकड़ों में पसर गई
बतरस सुख के साथ काफी की चुस्कियों जैसे—
धूप-सुख लेते हैं—लड़के और लड़कियां !
जाड़े की धूप, जैसे नया स्वेटर !
पीरियड—ऑफ की सूचना : एक विशेष क्लास
ब्लैक बोर्ड पर आलोक
दो बिन्दुओं के बीच खींचता रेखा।
शून्य को जोड़ता एक सेतु !
आज की बहसें
कृष्ण की तटस्थता, राधा का मौन
एक विचारणीय प्रश्न !
भक्ति-कालीन प्रेम पुष्टि-मार्ग से ही सम्भव
व्यक्त और अव्यक्त प्रेम
रोमांस, एक पुनर्मूल्याङ्कन
कुछ चेहरे खुश, बाकी सब उदास !
शान्ति ने पीछे से चोटी खींची मृदुला की
सुधा के ठहाकों में डूब गई क्लास
संध्या ने हथेलियों से ढांप लिया मुँह अपना
कोने से फिल्मी गीत—देखेंगे हम सपना !!
घण्टे की आवाज—
उषा भैरवी में गाती है
"बीती विभावरी जाग री"
द्वार खोल अरुण फेंकता कोलाहल।

मैं बर्फानी हवाओं के मौसम में
घूमना पसंद करता हूँ
और मेरे दोस्त को मुझसे शिकायत है।
अकेलेपन की उमस आलपिन जैसे चुभती है
बहुत बड़ा विश्वासी मन घुटन से टूट जाता है
मैं जाड़े की ठण्डी रातों में खिड़कियाँ
खुली रखता हूँ
और मेरे दोस्त को मुझसे शिकायत है।

उसे डर है यह हवा-फेफड़ों पर
कुंडली मार बैठ जायेगी
निमोनिया नसों में खून के साथ फैल जायेगा।
और मैं लिजलिजा हो जाऊँगा।
मेरा शहर लिजलिजों से भरा है
सुबह से शाम ट्राम-बसों में पसरकर
संक्रामक रोगों की तरह
सारे शहर में लिज-लिजापन फैलाते हैं
दीवारों से पीठ चिपका
कोल्ड ड्रींक की तरह धूप पीते हैं
जीने के नाम जीते हैं।
जाड़े की सारी धूप को निस्तेज बना दिया है
गर्म धूप से अस्तित्व पिघल जाता है।

मैंने एक पत्र सूरज के नाम लिखा है
कल से नया क्षितिज खोजकर निकलना
गर्म धूप छिड़कना—लिजे-लिजे गलकर बह जायें
शहर स्वस्थ हो।
धूप के रङ्गीन टुकड़े नन्हीं चिड़ियों की तरह आंगन में फुदकें
और मैं अपने दोस्त के साथ
बर्फानी हवाओं के झोंकों में
पुरस्कार जीते उल्लासित मन की तरह
उछलता गाता चलूँ।

भयाक्रान्त मेरे देश के लोगों
अब इस देश में कोई भी क्रांति नहीं होगी।

स्कूल कालेज विश्वविद्यालय
तीसरी श्रेणी के किरानी
और बड़े अफसर पैदा करते हैं
मेरी मां की तरह हर मां अपने बेटे से
उसके रोमांस की बात पूछती है
मेरे बाप की तरह हर बाप अपने बेटे को
आध्यात्मिक शिक्षा देता है
और पड़ोसिन से मुहब्बत करता है
शायद क्रांतियों से गुजरनेवाले देशों ने
सबको डरा दिया है
लेकिन सच, अब इस देश में कोई भी क्रांति नहीं होगी।

आज आदमी अपने ही कमरे में घूमकर
हजारों मील चलने की थकान महसूस करता है
और खिसियाकर सारे शरीर में
दाद-खाज-खुजली का मरहम रगड़ लेता है
राजमार्ग की नालियों में पेशाब करता है
पेशाब के साथ पौरुष बहता है
जो पसर कर आकृति का रूप लेता है
जिसे कारपोरेशन की गाड़ियां उठाकर फेंक देती है
और वह चिटकती नसों को टानिक से भिगो लेता है।

मार्क्स-नजरूल-निराला
पैदा करने वाली माताएं
सरकारी लूप की सहायता से
कितनी ही हत्याएं करती हैं
और यहां हर बचपन का प्यार
युवा बन बहिन की संज्ञा से शापित होता है
सीमाओं के वृत्त में समझौतों के साथ जीता है।

मूर्ख हैं वे लोग
जो आज भी क्रान्ति की बात करते हैं
युद्ध में लड़ते हैं
अपनी माँ बहन-बेटी को विधवा बना
मुक्त हँसी हँसते हैं
केवल एक बार देख जायें मेरा देश।
भयाक्रान्त मेरे देश के लोगों।
अब इस देश में कोई भी क्रान्ति नहीं होगी !
नहीं होगी !! नहीं होगी !!!

ठंडा—अहसास

हमारी नसों में बर्फ जम गई है
तीखे नेजों का चुभना भी महसूस नहीं होता।
भूकम्प - युद्ध - महामारी
मृत्यु जन्म कुछ भी हो
हम बच्चों की तरह रोयेंगे या पागलों की तरह हँसेंगे।
हमारा होना और न होना एक-सा हो गया है !!
अब सूरज की रोशनी
किसी पुरानी टॉर्च की धुंधली रोशनी है
और 'वह' भी
हजारों वर्ष की जलन के बाद ठण्डा हो रही है।
किसी मौसम के बदलने
और न बदलने का अहसास एक-सा ही होता है।

रोशनी आदमी को अन्धा बना देती है—इसी भय से
हमने अन्धेरे को अपनी बाहों मे बांधा।
और मकान बना लिये
लेकिन कहीं भी कोई खिड़की नही रखी
शायद हवा में घुल रोशनी आजाये
और हम अन्धे हो जायें।

मकानों की सपाट दीवारों के घेरों में घूमना
अच्छा लगा, जहां कोई त्रास नही—
आकाश में उड़ते-मुक्त वन पाखी की आवाज
हमारे मुँह में खींज का कड़ुवापन छोड़ती है
और हम तमाम पुस्तकालयों को
जलाने की योजना बनाते हैं
कवि-लेखक-दार्शनिकों को मारने की सोचते हैं

कि हमें क्यों सोचना सिखाया ?
लेकिन हमने अपने आपको मृत घोषित नहीं किया ?

कहीं कोई धुंआ होता है
तो हम मन ही मन डरते हैं
कि आग न पकड़ ले ?

और अपने आपमें सिमटकर छिप जाते हैं
ऊपरी सतह पर पसर जाते हैं
लेकिन मनकी बावड़ी में झांकने का साहस नहीं होता
जिसकी निचली सीढ़ी पर डोलती है आग।

र प ट

पन्द्रह अगस्त—सुबह का अखबार
दस हजार चूहों की अकस्मात मृत्यु
तमाम नगरों में प्लेग सम्भावना
(खाद्य समस्या टली)
सीमाओं पर दुश्मनों की नजर
(बेकारी घटी)
सङ्कटकालीन स्थिति में देश
बारूद फैक्ट्री का उद्‌घाटन—एक सेठ
तमाम देश-द्रोही जेलों मे
हृदय खोल दान दें
समाजवादी सङ्कल्प !

सोलह अगस्त—सुबह का अखबार
दस मिनिस्टर—भ्रष्टाचार अभियोग
जाँच आयोग—कहीं कुछ नहीं ।
देश भक्तों ने नये बंगले बना लिये
राशन की लाईन और लम्बी हो गई
बच्चों की तरह जन्मती समस्यायें
समाधान—परिवार-नियोजन केन्द्र ।

कुहासा पसर कर
बहुत मोटी परतों में जम गया है
तमाम बोरसियों के कोयले
कजला गये हैं
केवल गर्म-छाई से उठता
महीन धुआँ !
ताप—जिसको खोजने
दौड़ता जा रहा आदमी
बेतहाशा
ओढ़कर चादर बरफ की
हड्डियों की ओट बिखरी धमनियों में
रक्त-क्रम ठहराव न पकड़े
नुकीले पत्थरों की रगड़ से
खींचता—खरोंचे !!
सुनसान-बियावान जङ्गलों में
दौड़ती आग के टुकड़े बटोर
कजलाये कोयले कोंच
बोरसियां तेज करता
बेतहाशा
दौड़ता—जा रहा—आदमी !

चांद का टुकड़ा

धुले-पुछे खाली आकाश पर
किसी टिकुली के उभरे निशान जैसा
एक हिस्सा चांद का टुकड़ा !
लगता है—
किसी नवोढ़ा विधवा ने
सामाजिक मर्यादायें तोड़
नये सिरे से आंजी है टिकुली !!
और करीने से खड़े-चुभती चमक वाले
तमाम सठियाये-तारे
खांसकर एक साथ लगा रहे पंचायत।
"मुक्त सोचने पर अंकुश।
सजाए-मौतका निर्देश"
फिर भी चांद का टुकड़ा
बढ़ता जा रहा सम्पूर्णता की ओर।

कैंसर के आगे

निराधार है यह सोचना
कि मेरी प्रेमिका ने आत्म-हत्या करली है
'वह' आज भी जीवित है और रहेगी।
अन्धेरे ने कई बार अपने में समेटकर
एकाकार करना चाहा
लेकिन 'वह' जुगनू के पंखों में छिपी
रोशनी की तरह मुस्कराती रही
कारण कैंसर के आगे
कोई भी बीमारी नहीं मिली है अब तक
और आत्म-हत्या कैंसर से छोटी है
छोटा काम करने मे उसका कोई विश्वास नहीं है।
'वह' आज भी—
अमावस की रात के आकाश में, बिखरी रोशनी के टुकड़े
बटोर—हथेलियों पर रखती है
और पूनम का चाँद हँसने लगता है
रोमानी मौसम की हवा
जब भी उसके शरीर से गुजरती है
नीले कागज पर मुझे पत्र लिख देती है
'विवाह न तो कोई बहुत बड़ी उपलब्धि है
और न ही आत्म-हत्या
रोमांस की दुहाई देनेवाले और रामायणी लोग
एक से ही लगते हैं,
फ्रस्ट्रेशन को ही उपलब्धियाँ माननेवाले
निहायत फ्राड हैं ।।
सेक्स एक आवश्यकता के अलावा
कुछ भी नहीं ।।।
अकस्मात समुद्र के तूफान की तरह
उसके पेट मे हलचल मची
और एक कच्चे मांस का टुकड़ा—
बाहर आ गया
शरीर से खून की नदी बहती देख
डाक्टर ने होपलेस कह दिया
'वह' इस शब्द की ध्वनि पर हँसी
और कहा ये सब बीमारियाँ कैंसर से छोटी हैं
छोटा काम करने में मेरा कोई विश्वास नहीं

भाषा की खोज

तमाम शब्द
घिसे सिक्कों के ढेर की तरह
हो गये हैं—अब
और भाषा असमर्थ है
अभिव्यक्त करने आजको।
शंकों के उत्तर—हमेशा ही एक हैं॥
हर क्षण—संघर्ष
घूम रहा चक्राकार
भयावह—सुरंगों में
दौड़ रहा आदमी
खोजने भाषा
जो शब्द दे सके आज को
बस—आज को ही।

अहम् स्वीकारता नहीं
अपना चुकना !
बार बार स्वयं को दोहराने का अर्थ
मृत्यु !!
और मृत्यु का अस्तित्व
एक ट्राम का टिकट !!!
आधुनिकता—रंग-बिरंगे कपड़े नहीं
दिल और दिमाग का बदलना
मैं इन्तजार के सामने रखता हूँ
अजनबीपन
और चाँद की जगह देखता हूँ
ग्लेक्सो के टेबलेट्स ।
मेरा युग
इतना तेज दौड़ रहा है
कि आज खड़े रहने के लिये
दस हजार मील की स्पीड चाहिए ।

समय से पहले

समय से पहले ही
मुझे अपनी घड़ी ठीक कर लेनी होगी
ठीक कर लेना होगा अपना मस्तिष्क
और उसमें घूमते विचार भी
नौ बजते ही
मजबूत स्थितियों वाला व्यापारी आयेगा—
(मेरे बिकाऊ होने का विज्ञापन शायद उसने अखबार में पढ़ लिया है)
मुझे चालू खपत की चीज समझ
अपने तलपट से नफे के अङ्कों के साथ तोल
खरीद लेगा
मेरा उपयोग 'गुप्त फाइल' और 'दो नम्बर' के
रुपयों की तरह किया जायेगा
और मैं आदमी नहीं टेप-रेकर्ड बन जाऊंगा।
फिर मुझे ठण्डे कमरे में बैठाकर
बन्द कर दी जायेंगी सभी खिड़कियां
मेरे सामने घूमती रहेंगी
जीने की सभी रेशमी सुविधाएं
लेकिन अपनी सांस लेने पर रहेगा प्रतिबन्ध।
मेरे हाथों पर बांध दी जायेंगी फाइल
मस्तिष्क पर रखा रहेगा एश्श-ट्रे
पांवों पर चिपके रहेंगे शराब के विज्ञापन
और पेट में बढ़ता रहेगा अकाल
फिर भी आदेशानुसार बोलूंगा
"कृषि उत्पादन में बेहद विकास किया है हमने
बेकारी की संख्या घटती जा रही है
दिन प्रतिदिन

देश फिर बन रहा है सोने की चिड़िया !
और ये सारे शब्द
भीमकाय मशीनों द्वारा फेंक दिये जायेंगे
गिद्धों के शहर में
गिद्ध
सोने की चिड़िया की जगह
खायेंगे मुझको ही—
फिर मेरे कमरे में फेंकी जायेंगी रोटियां
भूख के पंजे से मुझे बचाया जायेगा
प्रतिक्षण
मेरी रगों में दौड़ते रक्त को जवानों के नाम निकाल
बेचा जायेगा ऊंचे दामों पर
और मुझे दिया जायेगा कंट्री-लिकर
मेरे हाथ-पांवों के हिलने की आशंका पर
ठोक दी जायेंगी कीलें
और मैं ईसा से ७३ वर्ष पूर्व
रोम के राजमार्ग पर झूलती ६४७२ गुलाम लाशों में से
एक लाश बन जाऊंगा
जिसकी दुर्गन्ध परेशान करेगी सारे मुहल्लों को !
किसी ठण्डे कमरे की सलीब पर लटकने से पहले ही
मुझे अपनी घड़ी ठीक कर लेनी होगी।

नायक की तलाश

हवा के किसी झोंके से बुझ गई हैं
बत्तियाँ
मंच पर रखी कुर्सियां
हिल रही हैं अपने आप।
'मेन स्वीच' जाँच कर रहा है 'नायक'
'नायिका' 'लाइन फ्यूज' करती है बार-बार॥
अंधेरे में बैठे दर्शक
घबराकर दौड़ते हैं इधर-उधर
दरवाजे की खोज में।
आपस की टकराहट पैदा करती है चिनगारियां!
चीखें, सीटियां, और गालियों के बीच
अंधेरे मंच से बोलता एक आदमी
रोटी नहीं खा रहे हैं—भूख
पानी नहीं पी रहे हैं—प्यास
कपड़े नहीं पहन रहे हैं—तन
और फिर
रोशनी का संचालन होता है टकराहट से
दर्शक दौड़ते हैं
अपने नायक को खोजने!

योजनाबद्ध षड़यन्त्र के जाल में फांसकर
मुझे फेंक दिया गया है उस मुहल्ले में
जहाँ हर मकान सांस लेता है
कच्चे गैस कोयलों के खारे धुएं के साथ
तैरते अन्धेरे में
खिड़कियों के सोखचों पर रोशनी को खोजती
सूने आकाश सी आँखें
अमावस के भूरे उजाले में पढ़ती हैं—अखबार !!
गली के हर मोड़ की बत्ती के पास
खड़ा है एक सफेद-पोश आदमी
और 'क्लोरोफोरमी' सांस के साथ
सूंघता रहता है सबको !!!
पश्चिम के आवारा बगीचे में खड़े
खजूर के बाँझ पेड़ों को ठेलती—हवा
जब भी गुजरती है
सारे मुहल्ले में एक सरसराहट फैल जाती है
मैं जमीन से डेढ़ फीट ऊपर उठी कुर्सी पर
अपना होना देखता हूं
बदली स्थितियाँ आफिस-बास की तरह
हावी हो जाती हैं
मैं अपने सेल्फ-स्टारटर को तलाशता हूं
और मुझे लगता है 'वह' सब लोगों के
'सेल्फ स्टारटर' लेकर भाग गया है
अब हर आदमी का चलना
दूसरों के ठेलने पर निर्भर हो गया है
फिर अगले ही च्छण
मेरे कमरे का आकाश भर जाता है
खेतों में जलते धान के धुएं से
एक चीख की तरह गूंजता है
पूरे जङ्गल का शोर

दरवाजे के बीच पड़ी है
दुर्गन्ध-युक्त मरी माँ और उसके गर्भ में अटकी है
शिशु की लाश
मैं सावन की प्रतीक्षा में गिनता हूँ
दौड़ते खाली बादल
लेकिन फिर बरस जाता है अ'''का'''ल !
अजगर की लपेट
मुझे बियाबान में ही पटक देना चाहती है
ताकि मैं केवल छटपटाता
बस छटपटाता ही रहूँ।
पूरब के आँगन में
किसी अंगीठी के सुलगने के पहले ही
कई लाख पाँवों के दौड़ने की रफ्तार
मुझे फेंक देती है राशन की दुकान पर
जहाँ लाइन में खड़े हर आदमी के कन्धे पर
उतर आती है बिलखती शाम
लोग खाली थैलों में आक्रोश भर
लौटते हैं घर
और इन्हीं लोगों के घर से पढ़ा जा रहा है
नक्सलबाड़ी
आज भी किसान
देशद्रोहियों की तरह उड़ाये जाते हैं गोली से !
षड़यन्त्रकारी अट्टहास कर रहे हैं।
और मैं इन्हीं खाली थैलों में
अपना आक्रोश खोजता हूँ।

अन्धेरे में आँखों पर हथेलियाँ रख
दबाने पर—दीखते हैं अनेक रंग
और हर काले रंग को घेरती है
लाल-लाल परछाईं।
सुबह के पहले ही—पेट के खाली कनस्तर में
गूंजने लगती है—गूंगे आदमी की चीख
धूप का ताप—उसे गैस-सिलेंडर की तरह
बर्स्ट कर देता है!।
मुझे चारों तरफ से ठण्डे गोश्त की हवा
घेरे हुए है
आखिर क्यों?
हर आदमी आधी रात को
निःशक्त जीवों के दरवाजे पर सिर पटकता है।
एक अन्तहीन नाटक चल रहा है मञ्च पर
नायक इतिहास की जगह पढ़ता है सेकण्ड-सेक्स
नायिका 'रीताफारिया' बनने के स्वप्न देखती है
जनता भय के साथ तालियाँ बजा—नाचने की मुद्रा बनाती है।
जिन नदियों के किनारे
लाशों के ढेर ने बना लिये हैं डेल्टे
क्या! वहाँ सूरज की हस्ती पस्त हो गई है?
यहाँ आज भी जीने का अर्थ
मेहनत करना—भूखों मरना।
अकाल-बाढ़-बर्फ के तूफान
और धार्मिक साँडों के युद्ध का कैलेण्डर पढ़कर
ग्लोब—मेरे देश को
दो हिस्सों में बाँटकर देखता है

एक पर लिखा है—डालर
दूसरे पर—रूबल।
कोफ्त होती है
गैंडेवाली खाल की प्रदर्शनी में
घूमकर !!
टेबलेट खा खाकर सोने की आदत है
सन्निपात में ही शायद बोल पाता हूँ सच !
कार्बनिक एसिड-सा उफनता आक्रोश
और उफनती नदियाँ
भाग रही है काले समुद्र की ओर—
एक कथा सुनी थी
"किसी देश के लोग—सारी रात कारखानों में काम कर
सुबह लौटते वक्त
सूर्य को पीठ पर लाद—ले जाते हैं घर—
अगर हवा ने चुराकर—यह कथा फैलादी तो !!
मुझे डर है यह जगह भी न बन जाय—हनोई !!
'मेन पावर स्पलाई' बन्द कर देने के बाद भी
क्यों ?
मुझे अन्धेरे में वही-वही रंग दिखाई देते हैं।

गजरदम बोलने वाले वन पाखी की आवाज
हरकारे की तरह—सारे आकाश मे दौड़कर
घरों की छतों पर बैठे—मौन को तोड़ती है।
मैं अपनी पीठ पर लेटे अंधेरे को झटककर
कैलेंडर में तारीख बदलता हूँ
मुझे आनेवाले महीने की पहली तारीख
अपनी सम्पूर्ण आवश्यकताओं की नोटिस, लिये
किसी पुलिस वाले की तरह घूमती दिखाई देती है।
और मेरी स्थितियाँ—मुट्ठियों मे विवशता भीचे
अकारण ही छंटनी के शिकार—साठ लाख हाथों की तरह
सामने खड़ी हो जाती हैं।
मैं उन्हें पुलिस को सौंपकर मुक्त होना चाहता हूँ
लेकिन मेरे भीतर की कड़ वाहट-जठराग्नि के साथ मिलकर
करती है—बगावत !

एक भूखण्ड
जहाँ अखबार और देश को कहते हैं 'हिन्दुस्तान'
और दोनों का संचालन करते हैं एक ही हाथ।
मैं उसी भूखण्ड में स्थित होकर
पेट की पखावज पर थाप देता हूँ
जिसकी आवाज सुनकर
सजी संवरी तवायफों की तरह भटकती संस्कृतियों के
बुश्शर्ट पहन
अपने स्वार्थ—छाते खोल
किसी शोक सभा की तरह
एक से लेकर बीस तक की गिनती वाले लोग
चारों तरफ एकत्रित हो जाते हैं।

मुझे रामायणयुगीन कथानायक घोषित कर
समस्त पाषाणी अहिल्यायें सौंप देते हैं
और पखावज की आवाज को अंधेरी सुरंगों में फेंक
मुंह पर टांक देते हैं—आदिकालीन शिलालेख........
हवा में तैरती उबले चावलों की गंध
भूख के दबाव से—चिटकती नसों को सहलाकर
वर्षा भीगी माटी में—बीज छिटकाते किसान की तरह
मुझ मे एक नया उल्लास पैदा करती है
मैं पेट की पखावज पर और जोर से थाप देता हूं।

गुजर गई बख्तरबंद गाड़ियों के निशान
और जहरीले धुंएं की गंध
मुझे पहुंचा देती है—एक मैदान में
जहाँ अधकटे शरीर और दिमागों पर
लम्बे छेदों के निशान देखता हूँ
उसी ढेर में दबी आवाजें प्रश्न करती हैं
कि हमारे ही कन्धों पर बन्दूकें रख
हमें मारनेवाला देश............?
पोटली के पल्ले में बंधे धान के लिये
बच्चों की आँखों में—गर्म सलाखें चुभाने वाला देश.... ?
फूस के झोपड़ों में—रंगीन सपनों की तरह
महकते हक को—फूंक देने वाला देश........ ?
मजबूत हाथों को मशीनों पर—ताले जड़
खाली टिफिन केरियरों की प्रतीक्षा का
गला घोंटनेवाला देश किसका है ?

आवाजों की भीड़ में अपनी आवाज मिलाकर
जैसे ही घूमता हूँ
टेबुल—कुर्सियों पर गर्दन झुका
फाइलों में दिमाग—रखनेवाले लोगों को
राजमार्ग पर—उठे हाथों के प्रश्नों के साथ देखता हूँ
स्कूल—कालेज की बेंचों पर—बैठा नया भविष्य
ब्लेक बोर्ड पर—पुते अंधेरे को पत्थर मार
प्रश्न करता है कि हमें
अंधा बनानेवाला देश किसका है ?

मैं अपनी मुट्ठियों को जोर से बांधता हूँ
मुझे ऋषि-मुनियों की उलझी दाढ़ियों में—झूलते सूत्र
और नपुंसक वीरों की कथायें पढ़ने को मिलती हैं

कथायें पसरकर पश्चिम की टोपियाँ ओढ़ लेती हैं
और मेड़ बकरियों की तरह—गणतन्त्र की घास
चरती हैं।
खूनखोर जानवरों का झुण्ड
संविधान के दांत से—
प्रश्नों की हड्डियां चबाता है।

=गर्दन
डालर और रूबल के घेरे में
फंसी है
फेफड़े के चारों ओर बैठा है—कैंसर
हाथ-पांव पर ठोक दी गई है
धर्म की कील
निर्णय की हर स्थिति में
तटस्थ हूं
किताबों में लिखने के लिए
मैं
एक स्वाधीन देश हूं।

कुर्सी की गन्ध

ठंडे कमरे में
केवल खाली कुर्सी रख दीजिये
हमलोग—कांपते रहेंगे
और काम करते रहेंगे।
कुर्सी में धँसा आदमी—कुछ भी नहीं
केवल एक ढांचा है
जो फड़फड़ाते कागजों पर
रख देता है पेपरवेट।
कुर्सी—जिसकी गंध से
फूल खिलने लगते हैं—बंध्या गमलों में
अनेक लोग—लहलहाने के लिये
भाग रहे हैं—गंध की खोज में।
कथा की सच्चाई
मूर्ख प्रजा का राजा—महामूर्ख ही हो।
कौन गर्म हवा फेंकता है—राजा के कमरे में ?'
उसे बूढ़े-थानेदार से पिटवादो—निर्देश है—
मकान का एक भी कोना गर्म न होने पाये ?

अतीत से बंधे देश के—कंसंट्रेशन कैम्प में
अपने ज़ख्मों को सहलाते-सहलाते
मुझे नींद आ गयी।
वसंत की हवा ने 'अटेंशन' की मुद्रा में बंधे घुटनों को
ढीला कर दिया
अपने ही पांवों पर घर तक पहुंचने का स्वप्न
मेरे भीतर की दहशत को हल्का कर गया।
लम्बी यातनाओं ने—आंखों के आगे
फैलादी है एक धुंध
मुझे लगता है—पहरेदारों ने
सभी रास्तों को नुकीले कांटों के जाल से
घेर दिया है
पता नहीं मेरे साथ के लोगों को
कहां गायब कर दिया गया है?
उनकी याद तक अपने पास रखने की
मनाही है।
कैम्प में तैरते गाढ़े अंधेरे के बीच
एक चेहरा तनकर खड़ा हो जाता है
मेरे मौन मुँह पर तमाचा मार पोस्टरों की ओर
इशारा करता है
जगह-जगह हिलते पोस्टरों के असंख्य हाथ
अनेक-अनेक प्रश्न पूछने लगते हैं
मैं कैलेण्डर में कैद—गूंगी तारीखों को देखता हूं।
आवाजों की सरसराहट—पहरेदार के कान
खड़े कर देती है—
मुझ पर फिर कड़ी नजर रखी जाती है।

अपने प्रत्येक जोड़ से अलग होकर
भीतर ही भीतर धंसता
ढहता—सफेद मकान का खंडहर
जिस पर बैठकर—एक बूढ़ा आदमी—भोर में
अब भी बजा जाता है—शहनाई
खण्डहर की खिड़की से शुरू होता है
घने-घने जंगलों का लम्बा सिलसिला
कैम्प में खलबली मचा देता है
और वही बूढ़ा आदमी
मोटी किताब के श्लोकों का टेपरिकार्डर
बार-बार सुनता है और सुनाता है।
बहुत से कबूतर टेपरिकार्डर की आवाज सुन
पंख फड़फड़ाकर उड़ना चाहते हैं।
एक मोटी बिल्ली—उछल कर
खंडहर की छत पर चढ़ जाती है
भय के मारे कबूतर आँखें बंद कर लेते हैं।
चुप रहने के कारण
पहरेदार बिजली का झटका लगता है
मैं कुछ भी तो बोल नहीं पाता झूठ या सच
बाहर या भीतर
बचने के लिये कोई भी जगह सुरक्षित नहीं है अब।
मैंने अपने ही भीतर छिपने की चेष्टा की
लेकिन वहाँ खड़ा सच
जिसकी पीठ को मंच बना बोल रहे हैं भोंपू
आसपास बिखरा है—कूड़े का ढेर
और घूमती रहती है सुअरों के चीखने की आवाज
टूटे खपरैलों की छत का आकाश
ढिबरी में जलते मंहगे किरासन का प्रकाश।

नगर-निगम के चमगादड़ों से
घबराया अपना ही अंश
सब कुछ खोकर भी
क्यों । बढ़ता ही जा रहा है वंश ?
सुबह के सायरन की चीख सुन
कंधे पर कुदाली अटका—लालटेन के साथ
बांबी की तरह बनी कोयले की खान में
अंधेरे की गहराई नापने उतर आता है।
फनों की तरह मुंह उभारे—कोयलों को काटकर
अपने पसीने की बूंदों को—हीरों की तरह चमकते देखता है
और खुरदरी धरती पर सुस्ता कर
आने वाले जीवन की रङ्गीन रेखायें खींचता है।
अपने भीतर फैली रेगिस्तानी प्यास को बुझाने
पानी खोजते-खोजते 'वह' डूबने लगा पानी में ही
बांबी के भीतर सांस लेने वाले 'सच' को
कोयला बनाने के लिए
उफनती नदी को ठेल दिया था उसी में।
'वह' पानी में डूबता-उतराता याद करता है
अपने बीमार बच्चे को
लौटने पर देखता है
बच्चे के गले में झूलती—दवा की खाली शीशी
और ठहरी हुई धड़कनों का स्पन्दन…………।
इसी 'सच' ने दोनों हाथों से मेरा गला दबाया
और—मैं बाहर आ गया
लेकिन बाहर चारों तरफ फैले कैम्प के—पहरेदारों ने
बेतहाशा पीटा—
मैं औंधे मुंह बेहोश होकर गिर गया।
पड़ोस की सरहद पर—एक दशक की तानाशाही को

झकझोरती हुई—हवा
कैम्प में घुसने की चेष्टा करती है
वही बूढ़ा आदमी—फिर टेपरिकार्डर बजाता है
एक नर्म हाथ मेरी पीठ पर लगे निशानों को
सहलाता है
उसके चेहरे पर—गर्भ में हंसते
नये भविष्य को—बचाने की दहशत फैली है।
'वह' कैम्प के हर खूंटे को उखाड़ कर
जमीन के भीतर सुलगती आग को बटोर
सब जगह फैलाना चाहती है।
मेरी आंखों पर टपके 'उसके' आंसू
गुलाब जल की ठंडक का सुख देते हैं
मैं एक नयी सुगन्ध महसूस करता हूं
और कैम्प में ही एक नायकहीन नाटक
आरम्भ कर देता हूं
परदे के पीछे की आवाज हर बार
घायल होकर—पेट के बल रेंगती हुई
कैम्प में घूमती है—
सारे दृश्य और भयावह लगते हैं।
मैं कोई नया संवाद पढ़ूं
उसके पहले ही कैम्प का अंधेरा कई परतों में
अनेक जगमगाते शहरों को समेट कर
मेरे भीतर उतर जाता है।
मुझे हर सुगबुगाहट सुनाई पड़ती है
और मैं कम्प की जमीन को
अपनी ऊंगलियों से खोदता हूं।

किसी भी मौसम में हँस सकता हूँ
वसन्त तो एक बहाना है।
अभी आसमान बहुत तेज तप रहा है
लोग अपने ही पसीने से घबराकर
छातों की ओट भाग रहे हैं
मैं—घर की खोह में दुबकी—छाया में बैठ
धूप में मिट्टी के ढेर से खेलते
बच्चों को देख रहा हूँ।
अपनी पीठ पर किताबों का बस्ता बांध
किसी भी मुहल्ले में स्कूल जा सकता हूँ
मेरे साथ बेंच पर बैठा दोस्त
कापी पर लाल स्याही छिड़क देता है
मैं चाक का घिसना देखता हूँ।
खिलौनों की दुकान पर
दबी हुई गुड़िया की मुट्ठी में बन्द है
कविता—
दुकानदार उसे बार-बार गोदाम में
फेंक देता है
मैं किसी तरह उस गुड़िया को छीन लेना
चाहता हूँ।

डरे घर

अब भी कांपते हाथों से दरवाजे खोल—लोग
झांकते हैं—बाहर
और हवा के पहुंचने के पहले ही—कर लेते हैं बंद।
कहां मिट पाया है डरे घरों का अंधेरा ?
'डरे घर' अंधेरे में बैठकर सुलगाते हैं बीड़ी।
ठंडे चूल्हों पर बैठी रहती है—भूख
खाली कटोरे खोजते हैं—धान
जब भी कोई तनकर खड़ा होता है
उसकी पीठ पर बजने लगते हैं कोड़े।
अंधेरा 'डरे घरों' की दीवारों को खाकर—हो रहा है मोटा।
एक डरे घर ने अंधेरे की छाती पर—ऊँगली से लिख दिया
"अब मास्को में उगने वाला सूरज
दिल्ली के पश्चिम में ढलता है"।
इसी सूरज ने—कुछ मकानों के चेहरे पर—पोतदी है सफेदी
आसपास हंसने लगे—रंगीन फूलों के बगीचे।
एक जादूगर—हर रोज डरे घरों से
खोपड़ी उतार कर—दिखाता है खेल
वह खोपड़ी में कुँए का बदबूदार पानी भरकर—फेंकता है
अंधेरा तालियां बजाकर नाचता है
'डरे घर' और अधिक दुबक जाते हैं।
जादूगर—सफेद औरत को—नारियल की माला पहना—नचाता है।
डुग-डुगी बजा राष्ट्रीय-गीत गाता है।
उसने झोले में छिपा रखी है बैंके
एक कागज को जलाकर—खड़ा कर दिया—सोने का महल
हांफनेवाली आंखों में—झोंक दिये गर्म खड़
दरवाजे पर तैनात—मोटी मूंछों वाला—बूंटों को
नेस्टापों की तरह बजाता है
हवा में नये आतंक के हंसने की आवाज—घूमने लगती है।

अपने चेहरों पर एक और चेहरा लगा
कुछ लोग पिछले दरवाजे से घुस गये—महल में
और सन्दूकों में बंद करने लगे—धूप
लेकिन बड़ी चिमनियों का धुआं—इन चेहरों को
बार-बार कर देता है काला।
और ये जादूगर की कठपुतली बन नाचते हैं
म ह ल में।
'डरे घरों' में जन्मे बच्चों की किलकारी
जब भी दिशाओं में गूंजती है
महल का अपना आकाश—गेस्टापों की तरह
सबको कुचल देता है।
गेस्टापो—अन्धेरी रात में—डरे घरों की
कुंडिया खटखटाता है।
और मुस्कराते चेहरों को उड़ा देता है गोली से
जादूगर—छत से थूककर
हर मौत के साथ जोड़ देता है—विद्रोही
डरे घरों से सुबकते स्वर सुनाई पड़ते, हैं।
महल के भीतर लम्बी दरारें देख
सामने से नगाड़े बजाता—हाथियों का दल—
गुजरता है।
और संसद में घुसता है
खून से लथपथ—गणतन्त्र भागकर
छिप जाता है—डरे घरों के बीच।
नये स्वप्न डकारता हुआ
सफेद खच्चरों का झुण्ड खुरों के निशान
लगाने उछलता है
लेकिन 'डरे घरों' के उठे हाथ
खदेड़ने को कसमसाते हैं।

अपने खूनी हाथों को
हमारी पीठ पर पोंछ—अंधेरे में
भागनेवालों से सावधान—कामरेड!
हर गली में—बुझी बत्ती को जलाने की जोखिम
अपने ही कन्धों पर उठाकर
मौत के साये में—सांस लेते घरों को
बताना होगा—
यह जुलियस सीजर का रोम नहीं
इन्कलाबी इस्पात नगर का हिन्दुस्तान है।
करवट बदलते इतिहास का इम्तहान
होता है—कठोर
और हवा में हाथ मारने भोंदों को
दफना देता है
बड़ी मशीनों की चीख—हमारे लिये
नयी नहीं है—
हमें हिटलर या मुसोली कोई भी तो
मिटा नहीं सका।
नये आतंक से ढोल और जोर से
पीटे जायेंगे।
पोस्टर चिपकानेवालों की पीठ में
भोंका जायेगा छुरा
अखबार पढ़नेवालों को मारेगा
सुरक्षा कानून
पुलिस आत्मरक्षा के नाम करेगी—फायर
मौत किसी बेगुनाह

लेकिन हमारे रक्त की एक भी बूँद
धरती पर जहाँ भी गिरेगी
हम रक्त-बीज की तरह—फिर
हो जायेंगे पैदा—कामरेड।
मौत अपने बौने हाथों से पकड़ना चाहती है
हमारी लम्बी परछाइयाँ
और हारकर किसी खंडहर के गले में झूल जाती है।
पराजित दलों का झुण्ड—खंडहर की लाश उठाकर
घूमता है—शहर में
और माइक पर 'हिटलर' का जाप करता है।
मृत सिक्के भुनाने का वक्त
गुजर गया है आज
हमारी पुतलियों पर धुंध नहीं
बैठी है रोशनी
हम काले कपड़ों की ओट होनेवाले
षड्यंत्र को पहचानते हैं—कामरेड
इतिहास सबको नंगा कर देता है।

कैसे कोई सो सकता है सुख की नींद
जब कि उसकी पीठ पर बजते रहते हैं
लोहे के जूते ?
दिन की रोशनी में खुलेआम होती हैं हत्यायें
लोग आँखें मींचकर कर लेते हैं अंधेरा
हत्यारा—पुलिसवर्दी में टहलता रहता है
आरोप—बुलबुलाहट की तरह
इधर-उधर उछलकर चुप हो जाता है
गवाह केवल नदी में तैरती जवान लाशें होती है।

इन्हीं लाशों के टीले पर बैठ
सफेद बालों वाली औरत कर रही है—जाँच
उसने पहन रखा है 'फर कोट'
दुर्गन्ध और धुएँ से परेशान होकर
नाक को रेशमी रुमाल से ढक—मोटी किताब पढ़ती है।
टीले से एक लाश खड़ी होकर बोलने लगती है
मैं डाक्टर हूँ
"देश के कैंसर का इलाज कर
अजन्मे बच्चों के लिये—खोलना चाहता था
नया अस्पताल—
मेरा अपराध—बाँये फुट पाथ पर चलता था"।
'वह' जांच फाइल में—एक शब्द
ग—री—बी—लिखकर
'इरेजर' से मिटाती है
फिर एक लाश खड़ी होकर बोलने लगती है।

मैं—शिक्षक हूं
अंधेरे में भटकते आदमी को
ले जाना चाहता था रोशनी में
सुरंगें खोदकर दिखाना चाहता था
धरती में छिपी आग
मेरा अपराध—नया आदमी सीख गया
सांप—अजगर के फनों को कुचलना
फिर जांच फाइल में उसी शब्द को लिखती है
और इरेजर से रगड़ती है।

चेहरे के तनाव को रूमाल से पोंछ
कड़ुवाहट थूक पाउडर लगा लेती है
अपने कोट की जेब से छोटे खरगोशों जैसी
सफेद टोपियां निकालती है
मोटे मसनदों की तरह पेट फुलाये—लोगों का दल
टोपियां लगाने धक्का-मुक्की करता है
और पहलवानों की तरह दंगल लड़कर
चित हो जाता है।

फिर दो लाशें खड़ी होकर बोलने लगती हैं
मैं मजदूर हूं, मैं किसान
अपनी धरती और आकाश सिरजकर
पसीने से सींचना—चाहते थे जीवन
माटी के मन की कठोरता को भिगो
उगाना चाहता था नयी फसल
अपने हंसुए से काटना चाहता था
आसपास फैली जहरीली घास
लोहे के साथ ढालकर—नया आदमी
हथौड़े की चोट से तोड़ना चाहता था—गुलामी

हमारा अपराध
हमने जिन्दा रहने की मांग की थी।

जांच फाइल में फिर उसी शब्द को लिखकर
'वह' जोर से रगड़ती है
ग—और री दो अक्षरों को मिटा देती है
कील ठुके जूतों की आवाज परेड की तरह—गूंजने लगती है।
हवा मे कुछ धमाके बजते हैं
मुँह से आग फेंकता—अग्निमुखों का दल
बंदरों की तरह उछलता—कूदता आता है।
अपने बिना निशान के झंडे को
टीले पर गाड़कर उसके चरणों को छूता है
एक स्वर में सत्ता—शरणम्—गच्छामि बोलकर—बैठ जाता है।
वह जांच फाइल मे बचे 'बी' अक्षर को मिटा देती है।
फिर एक लाश खड़ी होकर बोलने लगती है

मैं संवाददाता हूँ
मैंने असली हत्यारे को खोज लिया था
और बता दिया था उसका नाम पता
कुछ और नाम भी बताना चाहता था
मेरा अपराध—मैंने रोशनी को अन्धेरा नहीं कहा।
'वह' टीले पर खड़ी हो गयी
अपने 'वेनिटी बैग' में रखी राजा की तस्वीरों के पास
बैंकों की चाबी को सटा दिया

पाउडर-लाल लिपिस्टिक के बीच जांच—कागज को दबाकर
अंगुली में घुमाने लगी
टालरी मुद्रा में नाच—गीत गाने लगी

कील ठुके जूते साथ-साथ मिला रहे थे ताल
कीर्तनी मुद्रा में नाचने लगे दुकानदार।
गीत ने चारों तरफ फैलादी—एक नयी घबराहट
गाँव-बस्तियों के अधनंगे लोगों ने—घेर लिया उसको
और पूछने लगे हत्यारे का नाम
दिखाने लगे—मुँह पर उभरे बाजार के चाबुक निशान
उसने गीत को एक बार और दोहराया
कील ठुके जूते फिर परेड की आवाज में बजने लगे।
दूसरे दिन—अखबारों के आकाश में—मंडराने लगा युद्ध का धुआँ
लेम्प-पोस्टों के चेहरे पर पोत दी—कालिख
खिड़कियों को बन्द कर—शोशों को ढँक दिया काले कागज से
और चारों तरफ गूंजने लगे सायरन
नये भय का शाल ओढ़-बैटरी खरीदने—लोग खोजने लगे बाजार
जहाँ युद्ध का पाठ पढ़ा रहा था हर दुकानदार।
अधनंगे लोग फिर चलने लगे अन्धेरे में
यह अन्धेरा बहुत ही गहरा था
वे दुबक कर खुसुर-पुसुर करने लगे।
कील ठुके जूतों की आवाज बहुत जोर से बजने लगी।
पीठ और पसलियों को कुचल
जूते मस्तिष्क पर चढ़ आये
अधनंगे लोगों ने—एक साथ बुझती बीड़ियों के कश खींचे
और बाँये हाथों की मुट्ठियाँ कस
आकाश की ओर उठाकर चलने लगे
तभी दाँये हाथ ने—चीख चीखकर
इन्हीं को हत्यारा घोषित किया।
और अब हत्यारा
अपनी असली पोशाक में घूमने लगा है

वह मरकरी चश्मा लगाकर—हर आदमी को
गुप्तचर की तरह सूंघता है
और भेड़िये की तरह उछलकर पिचके पेट में
छुरा भोंक देता है
काली गाड़ी—सुरक्षा के लिये—पीछे-पीछे दौड़ती है।
उसका एक बहुत बड़ा दल
अपने खूनी कुर्ते पर 'मारसरक्ष' का तमगा
झुलाकर—हर गली में छुरा चमकाता है
और महारानी—विक्टोरिया की जय बोलता है।
उसने ऐलान किया है—देश के बांये रास्ते को
और उस पर चलने वाले पाँवों को-काटकर कर देगा दांये
राजभवन की कुर्सी उसकी पीठ थपथपाती है
गोल टोपी वाला सेठ नल की तरह
खोल देता है थैली
काली गाड़ी—सुरक्षा के लिये हवाई फायर करती है।
चारों तरफ—एक खौफनाक सन्नाटा रेंगता है
फैली रोशनी सिकुड़कर होने लगती है—छोटी
उसका ऐलान सुन—कुछ दल अपने कांपते झंडों को समेट लेते हैं।
और उसके साथ महारानी विक्टोरिया की जय बोलते हैं।
लेकिन अपनी जमीन पर चलनेवाला
अधनंगे लोगों का दल—ऐलान को
पुराने कागज की तरह मसलकर फेंक देता है
और झण्डे को ऊँचा उठाकर
बायें रास्ते चलता है।
उसका गुस्सा थर्मामीटर के पारे की तरह—चढ़ जाता है
और अधनंगे लोगों को चुनचुनकर
भेड़-बकरियों की तरह 'काली गाड़ी में लदवा लेता है

जालीदार खिड़की से गाड़ी सुरक्षा के लिये—बन्दूक दागती है
और 'वह' हर आदमी के चेहरे पर
जलती सिगरेट के दाग लगाता है—ताल ठोककर अट्टहास करता है
बहुत से लोग दर्द के मारे—गाड़ी में ही बोरियों का ढ़ेर बन जाते हैं।

बाहर की हवा बचे लोगों को फिर खड़ा कर देती है
'वह' उनके हाथ पाव की उंगलियों के नाखूनों को उखाड़ता है
लोग लहू लुहान होकर गिर पड़ते हैं।
सामने से आती 'हेड लाइट' की रोशनी
शेष बचे लोगों की आँखों को चमका देती है
वह फिर-घुटनों-टखनों की हड्डियों को
लोहे की तरह पीट कर—सिर से सबके बाल नोचता है
उफ करने पर—पिचके पेट में भोंक देता है छुरा
न्यायघोष सेनापति देते हैं आशीष
काली गाड़ी ठण्डे शराब से गुस्से को उतारती है
अखबार मोटे अक्षरो में छापता है प्रशंसा
'वह' खून से भीगे छुरे को कुर्ते से पोंछता है
और 'महारानी' विक्टोरिया की जय बोलता है।

'वह' हिटलर बनने के दिवा-स्वप्न देखता है
रात में—सड़कों पर दौड़ती छोटी रोशनी को—सैंड बेग में भरकर
मुक्के बाज की तरह ब्लेक-आउट का अभ्यास करता है
और पसीने-पसीने होकर हाँफने लगता है
फिर गुस्से के मारे सैंड बेग में छुरा भोंकता है
और देखता है—पेट फटे सैंड बेग से
छोटी रोशनी
हाथों में मशाल लिये दौड़ रही है।

किस इलाके से आरंभ करूं—कविता
हर जगह—
हत्या और खून का एक लम्बा सिलसिला है।
जनतंत्र की सुरक्षा में—संत्रास
घर घर घूम रहा है ढोल बजाता
गोयबेल्स—आकाशवाणी—अखबार
नेता के मुख से बोलता है—एक ही बात
आइन—कानून—स्वस्थ है अब!
कोई भी तो नहीं बोलता—
कि परछाई मिट रही है या आदमी?
समाजवाद आ रहा है या हत्यावाद?
"भस्मासुर" सारे देश को नचा रहा है नाच
कारखानों के ताले—होते जा रहे हैं—बड़े
हड्डियों का ढांचा बन रहा है—फौलाद।
क्या हो गया है—लेनिन के प्रावदा को?
क्या वहां भी झूठ की मशीन करने लगी है काम?
'जनसेवकों" को नये हत्याखाने का मिला है ठेका
'नवतंत्र' के बट्टों से तौली जा रही हैं—सारी लाशें
खुश हैं शहर के गुण्डे
तेज चाकुओं की धार देख
सभी की तरह काट गर्दन—बोलते हैं।
एक—मंत्र
सिद्धार्थ—शरणं् गच्छामि
और फिर गोयबेल्स सिद्धार्थ के मुँह से बोलता है—
सत्ता शरण् गच्छामि!
हत्या शरण् गच्छामि!!
नवतंत्र शरण् गच्छामि!!!

हत्याओं का सिलसिला और लम्बा हो जाता है।
थानों में सांडों को पिलाई जाती है—शराब
क्योंकि—बलात्कार ला—आर्डर के लिये—जरूरी हो गया है?
लेकिन—इससे भी बड़े बड़े ढोल पीट चुका है—संत्रास
रक्त की खौलती नदी से नहाकर निकला है—अब बंगला देश
'वियतनाम' ने डालर का पेट चीर
निकाल दी है—अंतड़ियां
और चीनने तोड़ दिये हैं—उसके घुटने।
हत्या और खून के प्रतिरोध मे
जन्मेगी—हर इलाके से कविता।
हर अक्षर बदला लेगा—कामरेड
हम कुत्तों की मौत मरनेवाले नहीं हैं।
कारण—'खूनी इतवार से ही सोच रहे हैं—यह धरती।

किस इलाके से आरंभ करु—कविता
हर जगह—
हत्या और खून का एक लम्बा सिलसिला है।
जनतंत्र की सुरचा में—संत्रास
घर घर घूम रहा है ढोल बजाता
गोयवेल्स—आकाशवाणी—अखबार
नेता के मुख से बोलता है—एक ही बात
आइन—कानून—स्वस्थ हैं अब !
कोई भी तो नहीं बोलता—
कि परछाई मिट रही है या आदमी ?
समाजवाद आ रहा है या हत्यावाद ?
"भस्मासुर" सारे देश को नचा रहा है नाच
कारखानों के ताले—होते जा रहे हैं—बड़े
हड्डियों का ढांचा बन रहा है—फौलाद।
क्या हो गया है—लेनिन के प्रावदा को ?
क्या वहाँ भी मूठ की मशीन करने लगी है काम ?
'जनसेवको" को नये हत्याखाने का मिला है ठेका
'नवतंत्र' के बट्टों से तौली जा रही हैं—सारी लाशें
खुश हैं शहर के गुण्डे
तेज चाकुओं की धार देख
सब्जी की तरह काट गर्दन—बोलते है।
एक—मंत्र
सिद्धार्थ—शरणं गच्छामि
और फिर गोयवेल्स सिद्धार्थ के मुँह से बोलता है—
सता शरण् गच्छामि !
हत्या शरण् गच्छामि !!
नवतंत्र शरण् गच्छामि !!!

हत्याओं का सिलसिला और लम्बा हो जाता है।
थानों में सांडों को पिलाई जाती है—शराब
क्योंकि—बलात्कार ला—आर्डर के लिये—जरूरी हो गया है?
लेकिन—इससे भी बड़े बड़े ढोल पोट चुका है—संत्रास
रक्त की खौलती नदी से नहाकर निकला है—अब बंगला देश
'वियतनाम' ने डालर का पेट चीर
निकाल दी है—अंतड़ियां
और चीनने तोड़ दिये हैं—उसके घुटने।
हत्या और खून के प्रतिरोध में
जन्मेगी—हर इलाके से कविता।
हर अक्षर बदला लेगा—कामरेड
हम कुत्तों की मौत मरनेवाले नहीं हैं।
कारण—'खूनी इतवार से ही सोच रहे हैं—यह धरती।

डाक्टर ने कहा : सोचना बन्द कर दो।

चुप्पी-ताले की तरह झूल रही है
कितने टुकड़े करेगा ?
थाली और बाजार की छीना झपटी में
कहां तक बच पायेगा ?
कल मुंह में ऊंगली डाल—तोड़ना चाहा चुप्पी
आदमी चीखने लगा : दांत में दर्द है
रजत-जयंती का जाप—चंडी पाठ की तरह
करता रहा—सारी रात
दर्द फैलकर—उतर गया—पेट में
डाक्टर ने इतना ही कहा : सोचना बन्द कर दो।
ताला बड़े आकार में बदल गया
एक संतरी—लगाने लगा पहर।
जिसने लोहे के टोप में छिपाली थी—चाबी।
ढाई दशकों के बाद महिलामुखी सूरज
मुक्ति का बहुरुपिया बन—उगने लगा दीवारों पर
जिसकी काली रोशनी ने लील लिया आदमी को।
पेट का दर्द गहरी खाई बन—फैल गया सारे देश में
बहुरुपिया बजाने लगा—झुनझुना
भ्रम थोड़े समय के लिए—पैदा करता है—नशीली नींद
आदमी जमीन छोड़कर बनाने लगता है—हवा में मकान।
गुलामी की गोद जन्मने वाले
कलेंडरों की मार खाकर हो गये—खल्वाट
जिनकी आंख संविधान की लोरी से खुली
उन्हें बना दिया मस्तान—
और आज जन्मी रचना घुटनों के बल दौड़
पकड़ना चाहती है—आग उगलते स्टोव का मुंह
उसे क्या पता—
बाहर संतरी लगा रहा है पहरा।

फिर अपने जूतों के फीते कसने लगे है लोग
चील की छाया गिद्ध बने—उसके पहले ही
भीतर का भय पोंछ
ट्राम-बसों में सफर करते खामोश होंठ
फिर हिलने लगे हैं।
हवाके बदलते रुखने—आकाश के पंजे को
दबाकर कर दिया है—छोटा
हथियारों को नोक तोड़ नही सकी—प्रतिवादी मन
ढोल और नगाड़ों के भीतर की पोल को
खोल दिया बड़ी आवाज ने
अब कौन सा नया करिश्मा—भटकायेगा सबको
चीजों मे लगी आग—फैल रही है सारे देश में
मार सबकी पीठ पर पड़ रही है।
जुबान बोलने वालों को कट रही है।
इतिहास के हर पृष्ठ से—गूंगे लोग
चीख चीख कर पूछ रहे हैं
क्या पच्चीस वर्षों के बाद लालटेन लेकर
फिर खोजनी होगी रोटी ?
जिसको तलाश ही आदमी को बनाती है
खौफनाक। मानसिक गुलाम।
मैं लूट खसोट के राज्य मे ले रहा हूँ—सांस
जहाँ बैंक-बेलेंस—शारीरिक शक्ति का नाम है—नागरिकता
आजादी का अर्थ किराये के पंडित बता रहे हैं—काल गर्ल
प्रतिवाद का पुरस्कार है—मौत।
देश के हर कोने में—
खतरे की घंटियाँ—बजने लगी हैं
फील्ड मार्शल अपने तमगों को झाड़ रहा है—धूल
नये सामंतों के बबर्ची भुन रहे हैं—मांस
गुलाम बन जाने के अंधड़ मे फंसे लोग
फिर अपने जूतों के फीते कसने लगे हैं।

कविता की यात्रा

खंडहर की तरह खांसता—खौफ
बार बार कालर पकड़ने की चेष्टा करता है
उस मकान की सीढ़ियों पर चढ़ते वक्त—मैंने महसूस किया था
कि कोने में बैठा 'वह—कभी को उछल सकता है।
बचने के लिये लड़ने का निर्णय—धक्का देकर घुसी हवा की तरह
हिला देता है सब कुछ—
पता नहीं किस बात के लिये—गुर्रा रहा है कमरे का टेलीफोन ?
एक ही सवाल तंग कर रहा है—कि धूप को धूप कहकर
कौनसा अपराध किया है—मैंने ?
स्वेटर बुनती ऊँगलियों की गर्मी—
बर्फ की छाती पर ठोकर मार—ठहरी नदी को चलाने वाले पांव
धरती के हवनकुंड मे—पसीने की आहुति देकर—अकाल खाने वाले हाथ
मुर्गी फांककर—देश का हालचाल पूछने वालों का भोलापन
दवा के अभाव में चीख चीखकर मरा बच्चा
जिन्दा रहने के लिये सस्ती मछली के भाव बिकी लड़की
ऐसे ही सच के लिये—अंत हीन यात्राओं से गुजरना पड़ा है
कविता को—
क्या चीजों को खुली आंख से देखना भी अपराध है अब ?
लकवा मारे हाथ उछल कूदकर—चारों तरफ
छिड़क रहे हैं—जहर
डोलती कुर्सी पर एक टांग की तपस्या
बूढ़े बगुले को याद दिलाती है
मछलियां बड़े बड़े तुफानों में भी धारा के विपरीत
तेरना जानती है
फिर क्या हो गया है मेरे आसपास को ?
क्या जीने का अर्थ—दूसरों की दया ही
रह गया है अब ?

आकाश का गरजना
धरती का भयभीत होकर—पाताल में धँसना
और बदले मौसम में भी वसंत का हँसकर
काँटों पर फूदकना
हवा धीरे-धीरे सब कुछ बोल देती है।
इसी हवा को अपनी मुट्ठी में रखो
और भ्रम की धूल—अंजुरि भर भर कर
चारों तरफ उछालो
अफवाहों के नगाड़े बजते रहें—बराबर।
अंधड़ में जो भी आँखें खोले
और दिशाओं की खामोश दीवारों पर शब्द फेंके
उन्हें मासूम मेमनों की तरह
रात्रि-भोज की प्लेट में सजालो।
मद्धिम बल्बों के प्रकाश में
एक से बीस तक की गिनती वाले रिकार्ड
अपनी धुनों को आनन्द महल में
बजा बजाकर कह रहे हैं
राजवंश में जन्मा चौपाया भी
होता है—राजा
जन मन गन नव नायक जय हो
भा-र-त-भा-ग्य वि-धा-ता।

हवा चुप है आकाश उदास—पत्तों के हिलने पर पहरा है
रास्तों पर सुनाई पड़ती है केवल
पूँछ उठाकर भागते सफेद घोड़ों की टाप
ऐसे मे खिड़की खोलकर बाहर झांकना ?
सन्नाटे पर सवार—पालतू कुत्तों का भौंकना
मोटे अन्धेरे में भी—दरवाजों पर दे जाता हैं—दस्तकें
ठहर जाती हैं नींद में फुसफुसाती सांसें
फिर भी—उनके नुकीले नाखून गिनने
कौन सीली माचिस पर रगड़ रहा है तिलियां ?

स्वेटर की तरह बुनते सपने का सिलसिला—इस तरह टूट जायेगा।
कि सूर्यमुखी-फूल की जगह—हर आदमी के सिर पर नाचने लगेगा—जूता
यह यकीन आँखों को भी नहीं था—
बच्चों की तरह कितने अबोध हैं—हम, कि नुक्कड़ पर चल रहे
बाइस्कोप को ही देख रहे हैं—पच्चीस वर्षों से !
हमने छोड़ दिये लड़ाई के असली हथियार
और बसंती हवा को थैलों मे भरकर
झूठ को हड्डी की तरह चबाने लगे
उस स्वाद में—दूर का रिश्ता भी नहीं रहा सच से !
नैतिकता—ईश्वर के भ्रम की तरह काटती रही भीतरी ही भीतर !!
हमारे पाँव जो अन्धेरे मे आँखों का काम करते थे
भूल गये चट्टानो सुरंगों का रास्ता
अब फिर कौन अपनी ऊँगलियों से—खोद रहा है कठोर माटी ?
नुक्कड़ का बाइस्कोप—बहुत भीतर तक खींच ले गया
वहाँ नदियाँ-पहाड़-झरने-पंछी सब था—लेकिन खामोश !
जल्दी जल्दी बदलने वाले दृश्यों में नायक-नायिका का युद्ध

थूकता रहा खून को मापा
जिसके छोटे बेड़ियाँ बन बाँध ले गये सबको !
इस दृश्य को नंगा करने वाले दर्शक—होठों पर मोटी किताब बांधे
आँखों में नेजों की तरह चुभते
इन्द्रधनुष की पीड़ा से चुपचाप चीख रहे हैं।
उफ यह दृश्य कितना भयावह है
जिसमें—कुर्सी पर चहलकदमी कर रहा है—चाबुक
और संभलने के पहले ही बजने लगता है—पीठ पर
डबडबायी पलकें—सहलाने वाले हाथों की तलाश में
फिर खट खटा रही है—लीलाबाड़ी की कुंडियाँ ?
अपनी सही जमीन छोड़ने पर
हर मोड़ खानी पड़ती है भटकावों की ठोकर
और लहूलुहान होने पर—याद आता है
इतिहास के फर्नेस में इस्पात बनता आदमी
वह आदमी—जो बाइस्कोप से बाहर रहकर
आरंभ से लेकर अबतक—करता रहा है युद्ध।
उसने जब भी सिर उठाकर—चलने की चेष्टा की है
झेलना पड़ा है यातना शिविर का अंधेरा
वर्णमाला के अक्षरों की तरह—उसे याद है
शरीर पर लगे घावों की तारीखें—
सड़क की तरह पसरे दर्द की अंत हीन यात्रा में
एक ही बात दोहराता रहा है
कि दुनिया की सबसे अच्छी और प्यारी चीज का
नाम है—जिन्दगी !

अभीतक वर्णमाला के पहले अक्षरों का .
ज्ञान भी नहीं हो पाया है—तुम्हें ?
देखो तुम्हारे साथ वाले सरपट भागते हुए
कहाँ से कहाँ चले गये ।
शायद चीजों को असली नाम से पुकारने की आदत ने
कहीं का नहीं रखा है—तुम्हें !!
चढ़ने और उतरने के क्रम में
ओवरटेक और लिफ्ट का व्यवहार कब सीखोगे ?
अब तो सब जगह दूध-घी की नदियाँ बह रही है
एकबार पानी को दूध कहकर कूद पड़ो
और बाहर निकलकर सबसे कहो
मैं रहा दुनियाँ का सबसे बड़ा सच !

चाबी के खिलौनों की तरह हाथ-पांव हिलाना
सिर झुकाना और झुकाये हुए ही चलते रहना
कुछ दिनों के लिए कनटोप की तरह
बैठ गया है सिर पर
अब बोलना-सोचना-पड़ोसी से बात करना
हवा की तरह दौड़ना और आग की तरह फैलना
एक अपराध हो गया है ?
जुबान होते हुए भी लोग चुप हो गये हैं।
ऐसी चुप्पी ठंडी रात के सन्नाटे में भी नहीं मिलती
दिन का ठंडा होना, गर्म स्वेटर में पैदा करता है—कंपकंपी
हथेलियों को रगड़ से जन्मी गर्मी
अभी शब्दों के कम्बल में छिपी बैठी है।
वे जमती हुई बर्फ से घबराकर
अपनी खटिया उठाये-आ गये धूप के तंबूओं में
टोपीदार कीलें ठोककर चरमराती खटिया को
फिर से कर लिया तैयार और टांगें पसार कर
खोदने लगे दांतों में अटका मांस
रूई की तरह धुनने लगे, 'मोटी किताब'।
टिक-ट्वेंटी की गंध समाप्त होते ही
तंबू की तनी रस्सियां फिर काटने लगी खटमलों की तरह
धूप तंबू से निकलकर सरकने लगी इधर-उधर
धंसने लगी जमीन के भीतर
और देखते ही देखते धूप पर बरसने लगे जूते
तंबू के चारों तरफ जूते और केवल जूते ही
बन्दनवार बन झूलने लगे।
चाबी के खिलौने जिस मुद्रा में जहां थे
वहीं रह गये खड़े
अब कौन चाबी भरे और उन्हें चलाये फिर से ?

शायद उसके आने की खबर कोई दे गया है
लोग मोमबत्ती जलाकर बैठे हैं प्रतीक्षा में।
बड़ी अजीब स्थिति है—
स्टॉपेज कहीं है—बस कहीं और रुक रही है
यात्री पत्तों की तरह उड़कर छत पर चढ़ रहे हैं
चक्का पंचर होकर भी चल रहा है
कंडक्टर कुछ और ही बोल रहा है
सुनने वाले कुछ और ही सुन रहे हैं
अर्थ कुछ और ही निकला जा रहा है।
भूख जुलूस निकाल रही है
गिरफ्तार फूल-माला हो रही है
गोली सच को लग रही है
मारा किसी को जा रहा है, मर कोई और रहा है
शहीद-वेदी किसी और के लिए बन रही है।
पगड़ी बांध का उद्‌घाटन कर रही है
बाढ़ किसी और का घर डूबो रही है
अकाल गांव को खा रहा है
हल जमीन जोत रहा है—धान कोई और ही काट रहा है
लाठी किसी और के सिर गिर रही है।
प्रेम कोई और ही कर रहा है
विवाह किसी और का हो रहा है
थाली कहीं और बज रही है।
परीक्षा कोई और दे रहा है, पास कोई और हो रहा है
सर्टिफिकेट किसी और को मिल रहा है।
मत किसी को दिया जा रहा है, मिल किसी और को रहा है
सत्ता कोई और ही संभाल रहा है।
बोल सब रहे हैं—कोई भी किसी को सुन नहीं रहा है
सब कुछ यथास्थित है।
अराजकता के घटाटोप में भी
लोग उसके आने की प्रतीक्षा में बैठे हैं।

किराये के मकान की छत और दीवारों को
दीमक ने चाटकर बना दिया है खोखला
कहाँ-कहाँ छिड़का जाये—गैमेक्सीन ?
घर बदलने का विचार—बड़ी पगड़ी की घूमती आँखें देख
हो जाता है—भयभीत
और झेलनी पड़ती है दोहरी मार।
इसी खोखले मकान के अंधे कमरे में
आदमी की मुक्ति पर करने लगा बातें।
गढ़ने लगा लड़ाई के नये हथियार
आसपास भी अपने को करने लगा तैयार
चारों तरफ गूंजने लगा हल्ला
तभी दांया हाथ दुश्मनों के साथ पोंछने लगा हथियारों का जंग
खींचने लगा लम्बी-लम्बी अंधी दरारें—
आधीरात की टेलीफोन पर बोलती आवाज ने कर दिया चौकन्ना
दरवाजा खटखटाकर अंधेरा फेंक गया समन
और पूरे मकान को घेर लिया पुलिस ने
लेकिन गैमेक्सीन की तेज गंध करती रही परेशान
पुलिस के घेरे में बैठा सोचने लगा
कहाँ हुई है कोई बड़ी उथल-पुथल
केवल कुछ लोगों ने कपड़े बदल—चलना आरंभ किया है
इसी अपराध में बुला लिया गया हूं कटघरे में
मुझसे पूछे जा रहे हैं सवाल
क्यों नहीं आग फेंक जला दिया बस्ती के लोगों को ?
क्यों नहीं हैं अबतक मेरे अनेक गाड़ियाँ ?
कितना है बैंक बेलेंस
किस-किस मुनाफे की जेब में रखा है हाथ ?
चुप रहने पर घोषित कर दिया गया—क्रिमिनल

मेरे कई आँखें लगा रही हैं पहरा
आवाजदार जूते घूम रहे हैं सामने
किसी को खबर तक नहीं कि मैं कहाँ हूँ
लेकिन सींखचे जड़े कमरे में भी सुरक्षित हूँ।
इस कमरे की नींव को भी चाट चुकी है दीमक
यहाँ 'गैमेक्सीन' का आना भी एक जुर्म है
राशनकार्ड पर मिलती है दिन की धूप
बहुत दिन हो गये अखबार पढ़े
पता नहीं क्या घट रहा होगा बाहर
पिछले दिनों की घटनायें—विस्तार के साथ हो जाती हैं खड़ी
एक औरत मर्द के बीच देश को लेकर हो रही है खींचातानी
दोनों अपनी फौजों के साथ डटे हैं कुरुक्षेत्र में
और थोथे बाँसों की तरह बंदूकें बजा—कर दिया गुमराह।
सींखचों पर गर्दन टिकाकर लेटने पर
मीठी गंध की तरह हँसता हुआ दिखाई देता है एक स्वप्न
लेकिन पुलिस ने एक गर्भवती औरत को
मार दिया गोली से
पोस्टमार्टम में लिखा है सड़क की औरत
उसके बच्चे को नर्स ले गयी अपने घर
लोरी के साथ सुनाती है लेनिन की कथा
मैं लिखना चाहता हूँ एक पत्र
तमाम दोस्तों को अपनी पत्नी को
मुझे 'नाजिम हिकमत' का विश्वास आता है याद
और याद आता है, रोम के वैभव को जलाने वाला
गुलाम सूर्य—
बाहर दुनिया बदल रही है करवट
और भीतर 'मुक्तिबोध' के अंधेरे में ही
खोज रहा हूँ कविता।

श्रीहर्ष

- जन्म :- करीब चार दशकों के आसपास की यात्रा
- कारखानों की नौकरी–फिर फ्री क्लासिंग, एम० ए० (हिन्दी) कलकत्ता विश्वविद्यालय से
- फिर बेकारी के धक्के
- सम्प्रति-मुदर्रिस एक फैन्सी स्कूल में
- वातायन, सामयिक का सम्पादन
- समय से पहले (कविता संग्रह)
- आदमी और आदमी (यन्त्रस्थ) (कहानी संग्रह)